International Journal of Advanced Academic Studies 2020; 2(1): 130-131

E-ISSN: 2706-8927
P-ISSN: 2706-8919
IJAAS 2020; 2(1): 130-131
Received: 20-11-2019
Accepted: 23-12-2019

डा० दिलीप कुमार ठाकुर
व्याख्याता, गृह विज्ञान विभाग, स.अ.ए.स्ना. महाविद्यालय, जमुई, बिहार, भारत।

शिवांगी
शोध–छात्रा, विश्वविद्यालय गृह विज्ञान विभाग, ल.ना. मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा, बिहार, भारत।

CorrespondingAuthor:
डा० दिलीप कुमार ठाकुर
व्याख्याता, गृह विज्ञान विभाग, स.अ.ए.स्ना. महाविद्यालय, जमुई, बिहार, भारत।

दलित महिलाओं में स्वास्थ संबंधी समस्या एवं समाधान

डा० दिलीप कुमार ठाकुर, शिवांगी

सारांशः
दलित महिलाओं की स्वास्थ्य समस्याओं के प्रत्यक्ष कारणों को बताना काफी सरल है। जैसे कि हम कह सकते हैं कि यौन संचारित रोग विभिन्न कीटाणुओं द्वारा होते हैं– उचित मात्र में अच्छा भोजन न खाने से कुपोषण हो जाता है तथा गर्भावस्था में होने वाली समस्याएँ अक्सर गर्भावस्था में उचित देख–भाल न होने से होती हैं परन्तु इन प्रत्यक्ष कारणों के तह में दो मूल कारण हैं– गरीबी तथा महिला का निम्न स्तर–जिनके कारण महिलाओं की स्वास्थ्य समस्यायें उत्पन्न होती हैं। अच्छा स्वास्थ्य एक ऐसी व्यक्तिगत व सामाजिक अनुभूति है जिसमे महिला अपने आप को सक्रिय, सृजनशील, समझदार तथा योग्य महसूस करती है। जिसमें उसके शरीर के जख्मों को भरने की क्षमता बरकरार रहती है। जिसमें उनकी विभिन्न क्षमताओं व योग्यताओं को यथा–योग्य सम्मान मिलता है। जिसमें वह चयन करने का अधिकार रखती है तथा निर्भीक रूप से अपने आप को अभिव्यक्त कर सकती है और जहाँ चाहे वहाँ आ जा सकती है।

प्रस्तावना
भारत में अभी भी एक तिहाई जन–संख्या गरीबी रेखा से नीचे रहती है। इनमे भी दलित महिलाओं तथा लड़कियों को गरीबी के दुष्प्रभावों को अधिकतम झेलना पड़ता है। लाखों करोड़ों महिलाएँ गरीबी के भँवर जाल में फँस जाती हैं जिसकी शुरुआत उनके जन्म लेने से पहले ही हो जाती है। जो बच्चे ऐसी महिला के गर्भ से जन्म लेते हैं जिन्हें गर्भावस्था में पर्याप्त भोजन नहीं मिला, अक्सर ही जन्म के समय कम वजन के और आकार में छोटे होते हैं तथा उनकी शारीरिक वृद्धि भी मंद गति से होती है। गरीब परिवारों में लड़कों की अपेक्षा लड़कियों को पर्याप्त भोजन मिलने की सम्भावना काफी कम रहती है जिसके कारण उनकी बुद्धि कुण्ठित हो जाती है। आमतौर पर स्वास्थ्य तथा शिक्षा के क्षेत्र में लड़कियाँ व महिलाएँ उपेक्षित ही रहती हैं। कार्य क्षेत्र में भी उन्हें दक्षहीन कार्य ही करने पड़ते हैं और पुरुषों की अपेक्षा कम मजदूरी मिलती है। घर पर भी उन्हें (बिना मजदूरी का) कार्य करना पड़ता है। परिणामस्वरूप थकावट, कुपोषण तथा गर्भावस्था में देखभाल की कमी के कारण महिला और उनके बच्चों के लिए खराब स्वास्थ्य का खतरा बढ़ जाता है।
गरीबी के कारण उसे ऐसी परिस्थिति में रहने के लिए विवश होना पड़ता है जिनसे अनेक शारीरिक तथा मानसिक समस्याएँ हो सकती हैं। उदाहरणतया गरीब दलित महिलाएँ अकसर अत्यंत खराब आवास में रहती है जहाँ स्वच्छता का नामो निशान या स्वच्छ जल नहीं होता। एकान्तता की कमी, पुरुषों की अपेक्षा महिलाओं के लिए अधिक नुकसानदेह होती है।
दलित महिलाएँ पर्याप्त व अच्छे भोजन से वंचित रहती है और उन्हें काफी कीमती समय व शक्ति ऐसा भोजन ढूँढने में लगानी पड़ती है जिसे वह वहन कर सकती हैं। ये महिलाएँ ऐसा कार्य करने के लिए विवश हो जाती है जो खतरनाक होते हैं या फिर जिनमें अधिक समय तक कार्य करना पड़ता है। यौन–उत्पीड़न की सम्भावना भी हो सकती है। भारी कार्य करने के लिए दैनिक वेतन भोगी की तरह नियुक्त की जाती है परन्तु इस प्रकार के कार्य करने के लिए आवश्यक अधिक शक्ति उन्हें नहीं मिलती है। स्वास्थ्य सेवाओं के उपलब्ध होने के बावजूद भी उन तक पहुँच नहीं पाती हैं। इसका कारण है कि वे घर के कार्यों में अथवा मजदूरी छोड़ कर नहीं जा सकती हैं।
ये महिलाएँ जीवित रहने के संघर्ष में इतनी व्यस्त हो जाती हैं की उन्हें न तो समय मिलता है और न ही उनमे इतनी शक्ति बचती है कि वे अपने स्वयं की आवश्यकताओं की पूर्ति की ओर ध्यान दे सकें। अपने भविष्य की योजनाएँ बना सकें नई दक्षताएँ सीख सकें या अपने बच्चों को बेहतर देखभाल कर सकें।
उन्हें अक्सर मजबूर कर दिया जाता है कि वे ईंधन, चारा तथा पानी जैसी वस्तुओं का परिवार के जीवित रहने के लिए प्रबन्ध करे तथा खेतों पर भी काम करें जिसके लिए उसे न कोई पैसा मिलता है और न कोई श्रेय। अपनी गरीबी के लिए जिम्मेवार ठहराई जाती है तथा उन्हें पैसे वालों की तुलना में कम महत्वपूर्ण और तुच्छ महसूस करने के लिए किया जाता है।

गरीबी ऐसे रिश्ते बनाने के लिए मजबूर कर देती है जिसमें जीवित रहने के लिए उन्हें पुरुषों पर निर्भर रहना पड़ता है यदि कोई महिला अपने तथा अपने बच्चों के सहारे के लिए किसी पुरुष पर निर्भर है तो उसे पुरुष को खुश करने के लिए ऐसे कुछ कार्य करने पड़ सकते हैं जो उनके स्वास्थ्य के लिए हानिकारक होते हैं। उदाहरणतया वह निर्मुख रूप से पारिवारिक हिंसा से पीड़ित रह सकती है या फिर असुरक्षित यौन संबंधों को न नहीं कह सकती है, क्योंकि उसे आर्थिक सहारे तथा सामाजिक स्वीकृति खोने का भय होता है। हालांकि पुरुषों के स्वास्थ्य पर भी इन कारकों का प्रभाव पड़ता है, फिर भी महिलाओं के साथ एक समूह के रूप में, भिन्न व्यवहार किया जाता है। उनके पास साधारणतया कम शक्ति होती है, संसाधनों की कमी होती है तथा परिवार व समुदाय में उनका स्तर निम्न होता है।

दलित महिलाओं में असमानता के प्रमुख कारण इस प्रकार है–

- पुरुषों की तुलना में अधिक महिलायें गरीबी से प्रभावित होती हैं। पुरुषों की तुलना में, अधिक महिलाओं को शिक्षा तथा अपने पैरों पर खड़ा हो सकने की दक्षता से वंचित रखा जाता है।
- पुरुषों की तुलना में, अधिक महिलाएँ चुप–चाप मानसिक व भावनात्मक समस्याओं से पीड़ित हो जाती हैं।
- पुरुषों के मुकाबले, अधिक महिलाओं को सम्बन्धों में प्रबलता का सामना करना पड़ता है।
- पुरुषों की तुलना में, काफी कम महिलाओं को महत्पूर्ण स्वास्थ्य जानकारी व सेवाओं की पहुँच होती है।
- पुरुषों के मुकाबले, ऐसी महिलाओं की संख्या काफी अधिक है जिनका अपने स्वयं के स्वास्थ्य सम्बंधित मूलभूत व जीवन के अन्य निर्णय लेने पर कोई नियंत्रण नहीं है।

पुरुषों की तुलना में, अधिक महिलाओं के घरेलु अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण योगदान को कोई मान्यता या अहमियत नहीं दी जाती है। इस योगदान से घरेलु कार्य, बच्चों की देखभाल तथा खेतों में जाने वाली मेहनत जैसे, ऐसे कार्य सम्मिलित हैं जिसमें बहुत मेहनत व समय लगता है।

इस प्रकार का वृहद विचार लेने से हमें दलित महिलाओं के निम्न स्वस्थ्य के लिए जिम्मेदार मूल कारणों को समझने में सहयता मिलती है। दलित महिलाओं का स्वास्थ्य सुधारने के लिए उनकी स्वास्थ्य समस्याओं का उपचार तो आवश्यक हैं ही इसके साथ–साथ उनकी जीवन परिस्थितियों में भी परिवर्तन लाना जरुरी हैं। ताकि उन्हें अपने स्वास्थ्य व जीवन पर अधिक नियंत्रण व शक्ति मिल सके।

निष्कर्षः

जब कभी ऐसा होता है तो महिला, उसके परिवार तथा समुदाय, सभी को लाभ होता है। एक स्वस्थ्य व प्रसन्न महिला द्वारा अपने अन्दर निहित सामर्थ्य को सम्पूर्ण रूप से पूरा करने की अधिक सम्भावना होती है। इसके अतिरिक्त उसके बच्चे अधिक स्वस्थ्य होंगे, व अपने परिवार की बेहतर देखभाल कर सकेगी और इस प्रकार अपने समाज के प्रति अधिक योगदान कर सकेगी। अतः किसी दलित महिला के स्वास्थ्य की समस्या केवल उसकी समस्या नहीं होती है। दलित महिलाओं का स्वास्थ्य एक सामाजिक व सामुदायिक मुद्दा है।

संदर्भ

1. विमन एंड हेल्थ प्रोग्राम इंडिया 1997
2. जेवियर समाज सेवा संस्थान, वोलंटरी हेल्थ एसोसिएशन ऑफ इंडिया
3. स्त्री उपेक्षिता (2002): सिमोन द वोऊअर अनुवाद– प्रभा खेतान, हिंदी पॉकेट बुक्स, दिल्ली
4. श्री निवास, एम.एन. (1978): द चेन्जिंग पोजीसन ऑफ इण्डिया वूमन, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, बाम्बे
5. व्यास, जयप्रकाश (2003): नारी शोषण, ज्ञानदा प्रकाशन, जयपुर
6. आदमी की निगाह में औरत (2009): राजेन्द्र यादव, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
7. डा० मंजुलता (2010): अनुसूचित जाति में महिला उत्पीड़न, अर्जुन पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली।